Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 03, (अगस्त, 2025)
पृष्ठ संख्या 48–49

उत्तर प्रदेश में गेहूं की किस्में

मेघना सिंह राजोतिया,
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, हरियाणा, भारत।

Email Id: – meghanarajotia@hau.ac.in

उत्तर प्रदेश, भारत का सबसे बड़ा गेहूं उत्पादक राज्य है, जो गंगा के मैदानों में फैला हुआ है और अत्यधिक उपजाऊ मिट्टी तथा अनुकूल जलवायु के कारण गेहूं उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभाता है। यहां की कृषि प्रणाली में गेहूं एक प्रमुख रबी फसल है, जिसे किसान पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार की तकनीकों से उगाते हैं।

उत्तर प्रदेश में उगाई जाने वाली गेहूं की किस्में न केवल उच्च उपज देती हैं, बल्कि वे बदलते मौसम, मिट्टी के प्रकार और रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता जैसी विशेषताओं के कारण किसानों को टिकाऊ और लाभकारी खेती के अवसर प्रदान करती हैं।

उत्तर प्रदेश में प्रमुख गेहूं की किस्में:

1. एचडी–2967: यह किस्म उत्तर प्रदेश के अधिकांश सिंचित क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर उगाई जाती है। यह अर्ध–बौनी किस्म है जो पीली जंग, ब्राउन रस्ट, और तना रस्ट जैसी बीमारियों के प्रति प्रतिरोधी है। इसके दाने मध्यम आकार के होते हैं और इसमें बेहतर मिलिंग गुणवत्ता पाई जाती है। चपाती के लिए यह एक बेहतरीन विकल्प है, जिससे यह घरेलू उपभोक्ताओं के बीच बेहद लोकप्रिय है।

2. पीबीडब्ल्यू–343: यह किस्म विशेष रूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अधिक प्रचलित है। यह उच्च उपज देने वाली और बीमारियों से बचाव करने वाली किस्म है। यह विभिन्न प्रकार की मिट्टी में अनुकूल होती है और सीमित सिंचाई वाले क्षेत्रों में भी अच्छी उपज देती है। इसके दाने कठोर होते हैं और बेकरी उत्पादों के लिए उपयुक्त हैं।

3. एचडी–3086: यह किस्म उत्तर प्रदेश में तेजी से लोकप्रिय हो रही है। यह गेहूं की शीत सहिष्णु किस्म है और इसमें झुलसा रोग (इसपहीज) तथा विभिन्न रस्ट रोगों के प्रति प्रतिरोध देखने को मिलता है। इसकी उच्च उपज क्षमता और बेहतरीन दाना गुणवत्ता इसे किसानों के लिए लाभकारी बनाती है।

4. के–1006 : यह एक पुरानी लेकिन भरोसेमंद किस्म है जो उत्तर प्रदेश के कई इलाकों में अब भी बोई जाती है। यह जलवायु परिवर्तन को सहन करने की क्षमता रखती है और कम सिंचाई की दशा में भी संतोषजनक उत्पादन देती है। इसकी चपाती की गुणवत्ता अच्छी मानी जाती है।

5. के–0307 : पूर्वी उत्तर प्रदेश में यह किस्म काफी प्रसिद्ध है। यह किस्म देर से बुवाई के लिए उपयुक्त मानी जाती है और इसमें उच्च प्रोटीन होता है। यह झुलसा और रस्ट रोगों के प्रति सहनशील है। इसके दानों की गुणवत्ता अच्छी होने के कारण बाजार में इसका मूल्य भी अच्छा मिलता है।

6. डब्ल्यूएच–1105: यह किस्म उत्तर प्रदेश में तेजी से लोकप्रिय हो रही है, विशेषकर उन किसानों के बीच जो अधिक उपज और कम समय में कटाई चाहते हैं। यह किस्म 110–115 दिनों में पक जाती है और सिंचित क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करती है। इसकी चपाती बनाने की गुणवत्ता भी अच्छी है।

7. राज–3765: हालांकि यह मूलतः राजस्थान की किस्म है, लेकिन उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड और दक्षिणी इलाकों में इसे अपनाया जा रहा है। यह अर्ध–बौनी किस्म है और जंग प्रतिरोधी है। इसकी अच्छी दाना गुणवत्ता और शुष्कता सहनशीलता इसे इन क्षेत्रों के लिए उपयुक्त बनाती है।

उत्तर प्रदेश में गेहूं किस्मों का महत्वः

उत्तर प्रदेश में विविध कृषि–जलवायु परिस्थितियों, जैसे कि सिंचित तराई क्षेत्र, आंशिक रूप से शुष्क पश्चिमी क्षेत्र, तथा भारी वर्षा वाले पूर्वी क्षेत्र, में अलग–अलग गेहूं की किस्में उपयुक्त पाई जाती हैं। इससे किसानों को अपनी स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार उपयुक्त किस्म चुनने का विकल्प मिलता है।

इन किस्मों का चयन किसानों को रोगों से सुरक्षा, उच्च उपज, और बेहतर बाजार मूल्य दिलाने में मदद करता है। साथ ही, बेहतर चपाती और बेकरी गुणवत्ता राज्य में घरेलू और औद्योगिक दोनों मांगों को पूरा करने में सहायक होती है।

निष्कर्षः

उत्तर प्रदेश में उगाई जाने वाली गेहूं की किस्में राज्य की कृषि को टिकाऊ, उत्पादक और लाभकारी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। किस्मों की विविधता किसानों को मौसम, मिट्टी और पानी की उपलब्धता के अनुसार फसलें उगाने की आजादी देती है।

इन किस्मों का उपयोग करके किसान न केवल अपनी आय बढ़ा सकते हैं, बल्कि राज्य की खाद्य सुरक्षा, रोजगार, और आर्थिक स्थिरता में भी योगदान दे सकते हैं। आधुनिक किस्मों की खेती उत्तर प्रदेश की हरित क्रांति को बनाए रखने और बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त करती है।